महात्मा गांधी क चिन्तन को प्रभावित करने वाले कारक

डॉ. लालचन्द कहार

व्याख्याता हिन्दी विभाग

राजकीय महाविद्यालय, कोटा राज.

सारां"ा

महात्मा गांधी का व्यक्तित्व वि"वमानवता का प्रतिनिधि व्यक्तित्व है। उनके जीवन आद"ार्ों में आस्तिकता, नैतिकता और ई"वर के न्याय में आस्था, सत्य और अहिंसा, श्रम और कर्मनिष्ठा उनके सर्वोच्च आद"ार्ा हैं। उनके विचारों के मूल में सत्य और अहिंसा, अपरिग्रह और अस्तेय, संयम और सदाचार, श्रम, त्याग और परोपकार, सत्याग्रह और नैतिकता, आचरण की शुद्धता और कर्मनिष्ठा, कर्तव्य पालन, आत्मानु"ाासन और आध्यात्मिकता जैसे गंभीर विचार बिन्दु है जिन पर जीवन भर निष्ठापूर्वक प्रयोग"ाील बनकर आचरण और व्यवहार किया। महात्मा गांधी के विचारों पर कई व्यक्तियों, ग्रंथों, घटनाओं और परिवे"ा का प्रभाव रहा लेकिन उन्होंने हर विचार और सिद्धांत को जीवन व्यवहार में प्रायोगिक स्तर पर उतारा तथा परखा तथा जीवन में संभव बनाया। वस्तुः गांधी जी के लिए जीवन सीखने और प्रयोग करने की पाठ"ाला रहा है। उन्होंने उनके सम्पर्क में जो सामान्य और महान व्यक्ति आये, सामान्य और महान पुस्तकें, ग्रंथ आये उनमें मानव कल्याण के विचारों को सीखा तथा परखा और अपनाया। **कुंजी भाब्द** : जीवन द"ार्न, विचार, प्रभाव, सत्य और अहिंसा, अपरिग्रह, अस्तेय, संयम और सदाचार, श्रम, त्याग और परोपकार, सत्याग्रह और नैतिकता, आचरण की शुद्धता और कर्मनिष्ठा, कर्तव्य पालन, आत्मानु"ाासन और आध्यात्मिकता।

भूमिका :

जीवन में कुछ घटनाएं ऐसी होती है जिनका प्रभाव व्यक्ति की सोच व दि"ाा को बदल देता है; उसके जीवन–द"ार्न को बदल देता है। व्यक्ति के विचारों, मन–मस्तिष्क और आचरण पर कई घटनाओं, सम्पर्कों, व्यक्तियों, पुस्तकों, लेखों, लेखकों आदि का प्रभाव पड़ता। महात्मा गांधी का व्यक्तित्व वि"वमानवता का प्रतिनिधि व्यक्तित्व है। उनके जीवन आद"ार्ों में आस्तिकता, नैतिकता और ई"वर के न्याय में आस्था, सत्य और अहिंसा, श्रम और कर्मनिष्ठा उनके सर्वोच्च आद"ार्ा हैं। उनके विचारों के मूल में सत्य और अहिंसा, अपरिग्रह और अस्तेय, संयम और सदाचार, श्रम, त्याग और परोपकार, सत्याग्रह और नैतिकता, आचरण की शुद्धता और कर्मनिष्ठा, कर्तव्य पालन, आत्मानु"ाासन और आध्यात्मिकता जैसे गंभीर विचार बिन्दु है जिन पर जीवन भर निष्ठापूर्वक प्रयोग"ाील बनकर आचरण और व्यवहार किया। महात्मा गांधी के जीवन–द"ार्न को किसी एक व्यक्ति, संस्था, धर्म, सम्प्रदाय, दे"ाी–विदे"ाी दा"ार्निक–विचारक या साहित्य ने प्रभावित नहीं किया, उसमें अनके तत्व मिलकर एक अलग ही जीवन द"ार्न का निर्माण करते हैं। इकबाल नारायण ने लिखा है कि मोहनदास करमचन्द गांधी का नेतृत्व एक असाधारण स्थिति का द्योतक था। राजनीतिक संघर्ष को साधनों की शुद्धि एवं प्राथमिकता से संयुक्त कर, अभयपूरित सुसभ्य आन्दोलन का आह्वान, वैचारिक तथा कर्मण्यवाद नवदृष्टि का द्योतक बना।

सम्पूर्ण संवेदन"ीलता से अनुप्राणित होकर गांधी ने यदि सामाजिक परिवर्तन को संभाव्य स्तर पर उतारा, तो दूसरी ओर शक्ति केन्द्रित राजनीति के मानवीय, लोकसत्तापरक विकल्प को प्रस्तुत किया।[1] गांधी जी के विचारों को प्रभावित व बल प्रदान करने वाले कई ग्रंथों व रचनाएं है।

विचारा और प्रभाव :

श्रवण–पितृभक्त नाटक और सत्य राजा हरि"चन्द्र नाटक का प्रभाव गांधी पर अमिट रहा। श्रवण–पितृभक्त नाटक से अपार सेवा व करूणा का बीज उनके हृदय में पैदा हुआ तो सत्य राजा हरि"चन्द्र नाटक से सत्य की अटल साधना और प्रयोग की भावना का बीजारोपण उनके हृदय में हुआ। गांधी जी पर भारतीय धर्म ग्रंथों और शास्त्रों व अन्य महान ग्रंथों का प्रभाव पड़ा था जिनमें नीति, सत्य, सदाचार, बलिदान, अहिंसा, नैतिकता, अपरिग्रह, आध्यात्मिकता, सेवा, धर्म, ईमान, कर्तव्य, पवित्रता, त्याग, कर्मनिष्ठा, सहन"ीलता जैसे गुणों का बीजारोपण संस्कार रूप में हुआ। गांधी जी ने सत्य को ही ई"वर माना था और उसकी साधना में जीवनपर्यंत लगे रहे। **सत्य के प्रति अटल निश्ठा की** प्रेरणा गांधी जी को सत्य राजा हरि"चन्द्र के नाटक से मिली। उन्होंने राजकोट में एक नाटक कम्पनी द्वारा अभिनीत इस नाटक को पूरी तनमयता के साथ देखा कि किस तरह राजा हरि"चन्द्र ने सत्य की परीक्षा में वि"वामित्र को अपना राजपाट दे दिया। यहां तक कि अपनी प्यारी पत्नी तारामती व पुत्र रोहितास को व स्वयं को बेचकर अपने वचन की रक्षा की। सत्य की पालना के लिए बड़े से बड़े कष्ट सहे। गांधी पर इस घटना के द्वारा सत्य के पालना का गहरा और मार्मिक प्रभाव पड़ा। उन्होंने महसूस किया कि राजा हरि"चन्द्र पर जैसी विपत्तियां पड़ी, वैसी विपत्तियों भोगना और सत्य का पालना करना ही जीवन का वास्तविक ध्येय है।[2] गांधी जी का घर धार्मिक आस्था और वातावरण का घर था। घर में रामायण का पाठ होता है, उसका भी मोहनदास के मन पर संस्कार रूप में अच्छा असर हुआ। महात्मा गांधी तुलसी कृत रामचरित मानस को भक्ति–मार्ग का सर्वोत्तम ग्रंथ मानते थे। इसके अलावा भागवत का व अन्य हिन्दू धर्म ग्रंथों का उन्होंने अध्ययन किया था जिसका प्रभाव उनके विचारों और मानवीय दृष्टिकोण पर गहरा प्रभाव पड़ा। यहां यह कहना अनुचित न होगा कि गांधी जी ने सभी तरह के विचारों और मान्यताओं को जाना लेकिन वे अंधनुकरण नहीं करते थे। उचित–अनुचित और विवके की तराजु में तोलकर ही, जांच परखकर ही अमल करते थे। उन्होंने मनुस्मृति का भी अध्ययन किया था लेकिन मनुस्मृति को पढ़कर तो उनमें ऐसी कपोल–कल्पित बातों पर अनास्था ही पैदा हुई।[3]

भारतीय साहित्य में गांधी पर सबसे अधिक गहरा प्रभाव गीता का है। यह गांधी जी की ही दृष्टि का परिणाम है कि उन्होंने गीता में भी अहिंसा का संधान किया। गांधी जी कर्मपूजक थे, निष्काम कर्म की भावना उनमें भरी हुई थी। भगवद् गीता उसके लिए जीवन की शक्ति थी तथा जिस तरह संतान(व्यक्ति) माता का आश्रय पाकर धर्य, आत्म वि"वास और शक्ति ग्रहण करता है, गीता गांधी जी के लिए जीवन संघर्ष में माता की

भांति ही थी। गांधी जी लिखते है कि आज गीता मेरे लिए केवल बाइबिल नहीं है, केवल कुरान नहीं है, मेरे लिए वह माता हो गई है। मुझे जन्म देने वाली माता चली गई, पर संकट के समय गीता माता के पास जाना सीख गया हूँ। मैंने देखा जो कोई माता की शरण में जाता है उसे ज्ञानामृत से तृप्त करती है।[4] उन्होंने भगवत गीता को अमर माता की संज्ञा दी है। गांधी जी ने गीता से राष्ट्रधर्म की प्रेरणा ली, राष्ट्र के लिए निष्काम कर्म की प्रेरणा ली और राष्ट्र की मुक्ति के लिए अहिंसा मार्ग अपना कर राष्ट्र को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त कराया। प्रोफेसर राममूर्ति ने ठीक लिखा है कि गांधी ने गीता से प्रेरणा लेकर एक नये ढ़ंग से राष्ट्रीय धर्म का शंख फूका, भारतीय राष्ट्र की आत्म"ाक्ति जागी। राष्ट्रीय मुक्ति का यह धर्म–युद्ध वस्तुतः निष्काम कर्म का ही पदार्थ पाठ था। फल की वासना त्यागकर पराक्रम करते जाने का एक नया अध्याय था। गीता का निष्काम कर्म गांधी की अहिंसा में उतरा और उसने अर्जुन तैयार किये। अन्त में राष्ट्र मुक्त हुआ।[5]

गांधी जी ने तुलसी कृत रामचरित मानस के प्रभाव को भी स्वीकार किया है। बचपन में ही गांधी जी को रामायण का पाठ सुनने को मिल गया था। वे उससे बहुत प्रभावित थे। वे लिखते है कि जिस चीज का मेरे मन पर गहरा प्रभाव पड़ा, वह था रामयण का पारायण। ... यह रामायण श्रवण रामायण पर मेरे अत्यधिक प्रेम की बुनियाद है। मैं आज तुलसीदास की रामायण को भक्ति मार्ग का सर्वोत्तम ग्रंथ मानता हूँ। उसने मेरे मन में रामायण के प्रति गहरी श्रद्धा की जड़ मजबूत की।[6] इसके साथ ही गांधी जी ने अपनी जीवनी में बुद्ध चरित और बाइबल के महत्व और प्रभाव को भी स्वीकार किया है। उपनिषद हमारे ऋषि–मुनियों की साधना, चिन्तन और द"ार्न सार रूप है। गांधी चिन्तन, जीवन द"ार्न, कर्म और मान्यताओं पर उपनिषद साहित्य का गहरा प्रभाव है। गांधी जी ने इनके अध्ययन से अपनी दृष्टि, दि"ाा और मान्यता के अनुसार सार रूप ग्रहण किया है। गांधी जी जिन भजनों एवं गीतों को पढ़ते थे, वे उपनिषदों यथा–ई"ा, मुंडक, कथ, तैत्तिरेय, छान्दोग्य, बृहदारण्यक आदि से ही लिए गये थे। गांधी जी जिस उपनिषद से सबसे ज्यादा प्रभावित थे; वह है–ई"ोपनिषद। गांधी जी के द"ार्न और विचारों को महाभारत ने भी प्रभावित किया है। गांधी जी के विचारों और व्यक्तित्व पर तीन व्यक्तियों का गहरा प्रभाव है।

उन्होंने स्वीकार किया है कि मेरे जीवन पर गहरी छाप डालने वाले आधुनिक तीन पुरूष हैं– रायचन्द भाई ने अपने सम्पर्क से, टालस्टाय ने 'स्वर्ग तेरे ह्रदय में' अपनी पुस्तक से और रस्किन ने 'अन्टु धिस लास्ट' पुस्तक से मुझे मंत्रमुग्ध कर दिया।[7] वास्तव में गांधी टालस्टाय से बहुत प्रभावित और प्रेरित थे, कहा जा सकता है कि वे गांधी के प्रेरक थे। गांधी जी ने पाया कि टालस्टाय में विचार और विचारानुकूल व्यवहार और कार्य, सदगी, सत्य, सत्यता की खोज की निरंतरता, अहिंसा, ब्रेड–लेबर ("ाारीरिक श्रम), कथनी और करनी में समानता, त्याग और सादगी, परोपकार और निःस्वार्थ परोपकाार, आचारण की सत्यता या सत्यता का आचरण, सिद्धांत को कर्म जीवन और व्यवहार में उतारना उनके जीवन और द"ार्न की मूल वि"ोषताए हैं।

गांधी जी जब जोहांस्बर्ग से नेटाल के लिए रवाना हुए तो पोलक ने स्टे"ान तक छाड़ने आत वक्त गांधी को रस्किन की 'अन्टु धिस लास्ट' दी और कहा कि यह पुस्तक पढ़ने योग्य है। गांधी जी ने 24 घण्टे के इस रास्ते में पुस्तक को पढ़ा। उन्होंने कहा है कि इस पुस्तक को हाथ में लेने के बाद मैं छोड़ न सका। इसने मुझे पकड़ लिया। डरबन पहुंचने के बाद उन्हें सारी रात नींद नहीं आई। मैंने पुस्तक में सूचित विचारों को अमल में लाने का इरादा किया। ... इन पुस्तकों में से जिसने मेरे जीवन में तत्काल महत्व के रचनात्मक परिवर्तन कराये, वह 'अंटु धिस लास्ट' ही कही जा सकती है। मेरा वि"वास है कि जो चीज मेरे अन्दर गहराईयों में छिपी पड़ी थी, रस्किन के ग्रंथरत्न में मैंन उसका स्पष्ट प्रतिबिम्ब देखा।[8] गांधी जी ने 'सर्वोदय' नाम से इसका गुजराती में अनुवाद किया। इस पुस्तक से गांधी ने सर्वोदय की धारण के सूत्र खोजे। उन्होंने इस पुस्तक से सर्वोदय के सूत्र को इस प्रकार प्रस्तुत किया– 1. सबके भले में अपना भला समाया हुआ है। 2. वकील और नाई दोनों के काम की कीमत एक सी होनी चाहिए, क्योंकि आजीविका का अधिकार सबको एक समान है। 3. सादा मेहनत–मजदूरी का, किसान का जीवन ही सच्चा जीवन है।[9] सर्वोदय की धारणा में इन तीन सूत्रों में सामाही हुई है। गांधी जी ने इन सूत्रों के बारे में स्पष्ट लिखा है कि पहली चीज मैं जानता था, दूसरी की मैं झलक पा रहा था तथा तीसरी को मैंने साचा ही नहीं था। सर्वोदय ने मुझे दीये की तरह दिखा दिया कि पहली चीज में दूसरी दोनों चीजें समायी हुई हैं। सवेरा हुआ और में इन सिद्धांतों पर अमल करने के प्रयत्न में लगा।[10] रस्किन के प्रभाव को गांधी जी कर्म और व्यवहार में लाना चाहते थे इसीलिए उन्होंने वेस्ट से 'इडियन ओपीनियन' को खेत में ले चलने का प्रस्ताव रखा, जहां सभी को अपने–अपने हिस्से का खेती से संबंधित सामूहिक रूप से शारीरिक श्रम करना था। इस प्रकार फिनिक्स की स्थापना कर रस्किन के प्रभाव को साकार किया। गांधी जी की सत्याग्रह धारणा थोरू से प्रभावित और पुष्ट है। गांधी जी ने थोरू के 'ऐसे आन सिविल डिसओबीडियेन्स' को 1908 में पढ़ा था जब वे दक्षिण अफ्रिका में अपने कारावास का दण्ड भुगत रहे थे। हालांकि इस पुस्तक को पढ़ने से पूर्व ही गांधी जी ने सत्याग्रह आंदोलन काफी प्रगति कर चुका था लेकिन इस पुस्तक को पढ़ने से उनकी सत्याग्रह की धारणा को बल मिला तथा उसकी पुष्टि प्राप्त की।[11]

निश्कर्श :

वस्तुः गांधी जी के लिए जीवन सीखने और प्रयोग करने की पाठ"ाला रहा है। उन्होंने उनके सम्पर्क में जो सामान्य और महान व्यक्ति आये, सामान्य और महान पुस्तकें, ग्रंथ आये उनमें मानव कल्याण के विचारों को सीखा तथा परखा और अपनाया दूसरी बात यह कि गांधी के विचार केवल सैद्धांतिक नहीं है। उन्होंने अपने विचारों को प्रायोगिक धरातल पर उतारा, परखा और जीवन में संभाव्य बनाया।

संदर्भ :

1. गांधी चिन्तन : तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य भाग–एक, सं. आ"ाा कौ"ाक, प्रिंटवैल जयपुर प्र.स.1995 पृ.सं.10

2. महात्मा गांधीः जीवन और द"ान रामलाल विवके, पंच"ाील प्रका"ान, जयपुर, प्र.सं. 1996, पृसं.5–6

3. महात्मा गांधी : जीवन और द"ान रामलाल विवके, पंच"ाील प्रका"ान, जयपुर, प्र.सं. 1996 पृ.सं.16

4. गीता की महिमाः महात्मा गांधी, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली, 1978, पृ.सं.01 20

5. गांधी मार्ग : प्रो.प्रोफेसर राममूर्ति(गीता आत्मा का अमर गीत), पृ.3

6. गांधी–सत्य के प्रयोग अथवा आत्म कथा, सस्ता साहित्य मंडल, पृ.42, नई दिल्ली1982

7. महात्मा गांधी : जीवन और द"ान, रामलाल विवके, पंच"ाील प्रका"ान जयपुर, प्र.सं.1996 पृ.सं.26

8. सत्य के प्रयोग अथवा आत्म कथा : महात्मा गांधी, अनु. का"ानाथ त्रिवेदी, नवजीवन प्रका"ान मंदिर, अहमदाबाद प्र.सं. 1957पृ. 271

9. सत्य के प्रयोग अथवा आत्म कथाः महात्मा गांधी, अनु. का"ानाथ त्रिवेदी, नवजीवन प्रका"ान मंदिर, अहमदाबाद प्र.सं. 1957 पृ. 271

10. सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा : महात्मा गांधी,अनु.का"ानाथ त्रिवेदी,नवजीवन प्रका"ान मंदिर, इलाहबाद,प्रं.स.1987 पृ.सं.271

11. गांधीय चिन्तन में सर्वोदय : राके"ा कुमार झा, पोईन्टर पब्लि"ार्स, एसएमएस हाइवे जयपुर प्र.सं.1995, पृ.सं.27